विश्व सामाजिक मंच के कुछ सपने

डॉ. एम. डी. थॉमस

विश्व सामाजिक मंच-2004 का मजबान बनने की खुशकिस्मती भारत मं पहली बार मम्बइ को मिली। उद्घाटन सत्र से लेकर समापन सत्र तक वह एक अनेखा समारोह ही रहा। करीब 130 देशों के लाखों लोगों का यह रंगारंग समागम अपने आप मं एक एसी घटना थी, जिसे कतई भुलाया नहीं जा सकता। करीब-करीब प्री दुनिया की एक झलक देने के साथ-साथ समूची इन्सानी सँस्कृति की एक सुखद एहसास भी कराने वाले इस मंच के आयोजकों को जितना सराहा जाय कम है। विभिन्न देशों से आये हुए सैकड़ों संगठनों का यह सँयुक्त संकल्प एक भारी-भरकम सपने का साकार रूप लिया, यह वाकई काययाबो की निशानी रही। इस विश्व मंच मं मानवता की गरिमा को बनाये रखने के लिए जी-तोड़ संघर्ष करने के कारण पुरस्कारों से नवाज़े गये कतिपय श्रेष्ठ इन्सानों-जैसे अरुंधती राय, मधा पाटकर, शिरिन एबादी, जोसफ स्टिग्लिटस, अरुणा राय, आदि का विद्यमान होना एक बड़ी उपलब्धि ही थी। लाखों लोगों की यह जमात एक महापव से कम नहीं थी, जिसे देखते ही बनता है। विविधता मं एकता तथा विश्व बन्धुत्व के आदश ने इससे अच्छा साथक रूप सारी दुनिया मं शायद ही कहीं लिया है।

इस विश्व सामाजिक मंच मं भिन्न-भिन्न संगठनों ने नाचते-गाते-बजाते हुए विश्व मानव समुदाय के लिए अपना-अपना सन्देश पश किया। सम्मलन-कक्षों मं सैकड़ों विषयों पर गंभीरता से विचार-विमश भी हुआ। मुदित सामगो के विक्षेपण से दुनिया भर के मुद्दों को उजागर किया गया। विभिन्न देशों के वेशभूषाओं को एक निगाह मं देखना तथा देश-विदेश के भोज्य-पदार्थों को चखना भी एक विशेष आनन्द से कम नहीं था। जनवरी के 16 से 21 तक मम्बइ मं चला विश्व समुदाय का यह बहु-आयामो मिलन-समारोह कतिपय नये तथा गंभीर विचारों का संगम-स्थल ही था।

विश्व सामाजिक मंच सोचने का एक नया अंदाज था। अतीत की बनायी हुइ पिटी-पिटायी राहों से चलने से असहमति इस मंच की भीतरी पहचान थो। पुरानी मान्यताओं की अप्रासंगिकता को पुकार-पुकार कर बताना उसका ध्येय था। खोखली और खुदगर्जी से भरी-पूरी परम्परावाद से निजात पाकर एक नये आथिक और सामाजिक आदश को संस्थापित करना इस विश्व मंच का मकसद था। तथाकयित समद्ध और ताकत वाले देशों द्वारा बनायी गयी दुनिया की परिभाषा को धिक्कारना भी इस मंच का लक्ष्य था। वतमान दुनिया की प्रवृत्तियों के दुष्परिणाम को नकारने का मकसद इस सामाजिक मंच का विश्व-संकल्प था। विभिन्न देशों के शासक-प्रशासक और धर्म-नेताओं के स्वार्थ-भरे तथा सामन्तवादी रवैये के खिलाफ़ एक चुनौतीपूण आवाज़ भी इस विश्व मंच मं मौजूद थी। नेतृत्व के गुणें से वंचित नेतों के नेतृत्व पर उम्मोद नहीं रखते हुए अपने ही बलबूते उठकर अपने परों पर खड़े होकर अपनी दिशा खुद टटोलने की कोशिश करने वाली आम जनता की एक नयी चेतना विश्व सामाजिक मंच की चरम उपलब्धि थी।

वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, आदि नीतियाँ उच्च वग के कुछ लोगों को ही सुरक्षा प्रदान करती हैं। आम लोगों की जरूरतों को नज़रअन्दाज़ करने की तथा उनके अस्तित्व की अवज्ञा करने की एक हद होती है। दलित, जनजाति, गरीब और नीची जाति के लोग कब तक हाशिये पर सरकाये हुए रहेंगे? बच्चे कब तक प्राथामिक शिक्षा से वंचित तथा अकाल मौत के शिकार रहेंगे? महिला और मज़दूर कब तक दूसरी श्रेणी के नागरिक माने जाते रहेंगे? हर इन्सान के लिए न्याय के मुताबिक अपने-अपने हिस्से को सुरक्षित व रने के संकल्प पर दुनिया के तथाकथित बड़े पढ़े-लिखे और शासक वग कब तक इमानदारी से अमल करने लगेंगे? ये हैं कुछ सवालात जो विश्व सामाजिक मंच दुनिया के सामने पश करते हैं।

विश्व सामाजिक मंच मान-सम्मान की लड़ाइ थी। वह बुनियादी मानवाधिकार वी बुलन्द मांग थी। यह पश्चिमो देशों की या तथाकथित उन्नत देशों द्वारा प्रस्तुत इन्सानी विकास, सुख-समृद्धि, शांति आदि की नज़रिये के साथ-साथ उनकी शाहंशाही की

पराजय की तस्वीर थी। यह विश्व समाजिक मंच सम्‌ची मानव समाज मं एक नये आपसी समोकरण और सरोकार की ख्वाहिश थी। यह जाति, रंग, नस्ल, लिंग, भाषा, सम्प्रदाय, आदि के आधार पर किसी भी भेदभाव के बगैर एक बहुआयामो इन्सानी सँस्कृति की ओर मानव समदाय की आम जनता द्वारा उठाया गया एक ठोस कदम था। यह मंच नेतागिरी, दादागरी, युद्ध, लालच, अतिक्रमण, शोषण, मनमटाव आदि नकारात्मक प्रवृतियों से ऊपर उठकर इन्सानी समाज के एक बहतर भविष्य की ओर एक सोचा-समझा और प्रतिबद्ध सफर की शुरुआत थी। यह विश्व समाजिक मंच मानव समाज के लिए एक नये भविष्य के निमाण के लिए एसे कुछ सपनों का सजीव नक्शा था।

हाँ, एक दूसरा विश्व ममकिन है। बस इतना ही, निहित स्वार्थ दूर रहे, खुला सोच चलता रहे। इस दिशा मं संकल्पित, इन्सान और संगठन बढ़ते रहें। ये सभी उदात्त सपने साकार रूप लें और कामयाबो की ऊँचाइयाँ छू लें। विश्व मानव समदाय का एसा संघषं जारी रहे, यही मंगलकामना है।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS